लोक-सभा

सोमवार, २४ फरवरी, १९५८

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

मौलाना अबुल कलाम आजाद, श्री बी० दास और श्री वी० एम० उबैदुल्ला का निधन

†प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक कार्य और वित्त मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू): अध्यक्ष महोदय, प्रायः ऐसा संयोग आता है कि मुझे अपने किसी साथी या किसी महान् व्यक्ति की मृत्यु का यहां उल्लेख करना पड़ता है। मुझे इस कर्तव्य का जो कि एक दुखपूर्ण कर्तव्य है—आज फिर पालन करना पड़ रहा है क्योंकि हमारे एक साथी, जो कि अभी कुछ दिनों पहले तक हमारे साथ थे, अचानक हमें छोड़ कर चले गए जिससे हमें महान् कष्ट और तीव्र वेदना हुई है और जिससे न केवल संसद् में उनके साथियों को ही बल्कि देश की असंख्य जनता को भी महान् दुःख हुआ है।

साधारणतया यह एक परम्परा सी बन गई है कि जब किसी महान् व्यक्ति का निधन होता है तो हम यही कहते हैं कि उसकी मृत्यु से अपूर्व क्षति हुई है और एक ऐसा अभाव उत्पन्न हो गया है, जो पूरा नहीं किया जा सकता। यह बात प्रायः सत्य होती है पर मौलाना आज़ाद की मृत्यु के सम्बन्ध में यह बात अक्षरशः और पूर्णत्य सत्य है। मेरा मतलब यह नहीं है कि अब भारत में कोई महान् व्यक्ति पैदा नहीं होगा। पहले भी भारत में महान् व्यक्ति हुए हैं और आगे भी होंगे। पर मैं तो यह कहना चाहता हूं कि मौलाना आज़ाद में जिस विचित्र और विशेष प्रकार की महानता थी, वैसी विचित्र और विशेष महानता का व्यक्ति शायद अब भारत में या अन्य कहीं पैदा न हो।

उनके महान् ज्ञान, उनकी विद्वता और उनकी वाक्पटुता की विशेषताओं के बारे में हम सभी जानते हैं, अतः इस सम्बन्ध मैं कुछ कहने की आवश्यकता नहीं समझता। वह एक महान् लेखक थे और अन्य बहुत-सी बातों में वह महान् थे। वैसे तो अन्य बड़े-बड़े विद्वान् लेखक और वक्ता हैं पर उनमें भूतकाल की और वर्तमान युग की महानता का गौरवपूर्ण सम्मिश्रण था। वह हमें हमेशा इतिहास के पुराने युगों—यूरोप के पुनरोत्थान युग और फ्रांस की राज्य क्रान्ति के मेधावी व्यक्तियों की याद दिलाते थे। उन्हें देखकर हमें यह भी स्मरण हो आता था कि प्राचीन युग और उस युग के लोगों की क्या महान् विशेषतायें थीं। यह सत्य है कि प्राचीन काल में अनेक बुराइयां भी थीं। पर महानता,

†मूल अंग्रेजी में।

श्री बी० दास और श्री वी० एम० उबैदुल्ला का निधन

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

शिष्टाचार, सहिष्णुता और धैर्य जैसे गुण जो उस समय थे वे आज के लोगों में दुर्भाग्य से नहीं मिलते। आज हम विज्ञान और प्रविधि के दृष्टिकोण से चाहे कितनी भी उन्नति क्यों न कर लें पर हम में वह प्राचीन गौरव नहीं दिखाई पड़ता। हम आज चाहे चन्द्रमा तक पहुंचने तक की भी कोशिश करें पर यह सब उस गौरव, सहिष्णुता से विहीन होगा, जो संसार के आरम्भ से जीवन का स्रोत समझा जाता था। अतः प्राचीनकाल की गौरवपूर्ण महानता और वर्तमान युग की विद्वता और सहिष्णुता के अनौखे और मिले-जुले स्वरूप थे—हमारे मौलाना आजाद।

हम सब जानते हैं कि उनमें अपनी युवावस्था से ही भारत को स्वतन्त्र कराने की भावना थी और वह क्रान्ति के उग्र साधनों को भी अपनाने की ओर बढ़े। पर शीघ्र ही उन्होंने यह महसूस किया कि इस रास्ते पर चलने से परिणाम अच्छा नहीं निकलेगा।

मौलाना आजाद भारत की उस मिली-जुली सभ्यता के विशेष प्रतिनिधि थे, जो कालान्तर में भारत में विकसित हुई है। मैं यह नहीं कहना चाहता कि हर आदमी को मिली-जुली सभ्यता का प्रतीक होने के लिये मौलाना आजाद की तरह ही होना चाहिये। भारत के विभिन्न भागों में इसके प्रतिनिधि हैं परन्तु मौलाना आजाद दिल्ली, बंगाल या कलकत्ता जहां भी कहीं रहे, वहां इन भिन्न-भिन्न मिली-जुली सभ्यताओं के—जो भारत में समय-समय पर आईं और यहां के लोगों को जिन्होंने प्रभावित किया और स्वयं भी उनसे प्रभावित हुए—प्रतीक बन कर रहे।

इस प्रकार वह भारत की सभ्यता के, जहां तक उस पर पश्चिमी एशिया के देशों की भिन्न-भिन्न सभ्यताओं—ईरानी सभ्यता, फारसी सभ्यता, अरबी सभ्यता की छाप थी, प्रतीक थे। इन सभ्यताओं का भारत की सभ्यता पर हज़ारों वर्षों तक प्रभाव रहा। अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए मैं नहीं समझता कि भष्विय में ऐसा कोई व्यक्ति पैदा होगा जो उनकी कमी को पूरा कर सके क्योंकि जिस युग में वे रहे उस युग में पहले ही परिवर्तन होने लगा था। हम में से कुछ लोग उस युग के धुंधल से स्मारक हैं, जो बीत चुका है।

मैं नहीं जानता कि आने वाली पीढ़ी के लोग उस युग के सम्बन्ध में कोई भावनात्मक कल्पना भी कर सकेंगे। आज हम पहले की अपेक्षा एक भिन्न प्रकार से कार्य कर रहे हैं; हमारी विचार धाराओं में काफी अन्तर पड़ गया है और हमारे विवेचनात्मक दृष्टिकोण में काफी परिवर्तन हो गया है जो कि हमें उस प्राचीन युग से पृथक् करता है।

मैं इस बात की कोई शिकायत नहीं करता कि हममें कोई परिवर्तन हो गया है : परिवर्तन होना उचित है। यदि परिवर्तन न हो तो हमारे अन्दर अनेक पुरानी आदतें, जो किसी विशेष काल के लिए उचित थीं, और जो अब उचित नहीं हैं, बनी रहेंगी। पर मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि प्राचीन युग की अनेक बुराइयों के साथ अच्छाइयां भी मिटती जा रही हैं और उन अच्छाइयों के एक उज्जवल प्रतीक थे मौलाना आजाद।

एक बात का उल्लेख मैं अवश्य करूंगा और वह मौलाना आजाद के जीवन और उनकी शिक्षा के सम्बन्ध में है—यद्यपि मुझे खुद इस बात की गलतफहमी थी और मैं स्वयं भी यह गलत बात कह चुका था। आज सुबह अखबारों में मौलाना आजाद के सम्बन्ध में सरकारी संकल्प का उल्लेख है। उसमें एक गलत बात कही गई है—जैसा कि मैंने कभी कहा था—कि वह अल-अजहर विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए गये थे। पर ऐसी बात नहीं है, यह बात गलत है। पहले मैं भी इसी गलतफहमी का शिकार था, नहीं तो मैं सरकारी संकल्प में यह गलत बात न प्रकाशित होने देता। सच तो यह है कि वह कभी भी अल-अजहर विश्वविद्यालय में अध्ययन हेतु नहीं गये। हां, वह काहिरा अवश्य गये थे पर एक दर्शक या भ्रमणकर्ता के रूप में और उन्होंने वहां का भ्रमण किया; वह कभी भी वहां पढ़ने नहीं गये थे।

उनकी शिक्षा अन्यत्र हुई थी । उन्होंने मुख्यतया कलकत्ते में—अरबी स्कूल में और अन्य स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की थी । पर अरब में वह कई वर्षों तक रहे । उनका जन्म वहीं हुआ था और उन्होंने मिस्र का, पश्चिमी एशिया के अन्य देशों का भी भ्रमण किया । पर यह एक दूसरी बात है ।

आज हम उस महान् व्यक्ति की, उस ज्वाजल्यमान मेधावी व्यक्ति की मृत्यु पर शोक मना रहे हैं जिसमें समस्याओं को सुलझाने की एक अद्भुत क्षमता थी । मैंने 'ज्वाजल्यमान' शब्द का प्रयोग किया—मैं समझता हूं कि उनके लिए यह शब्द बहुत ही उपयुक्त है । जब हम लोगों में से ऐसा कोई व्यक्ति, जिसे आप चाहे साथी, सहयोगी, मित्र, नेता या शिक्षक या और कुछ भी कहें—चला जाता है तो हमारे जीवन में, हमारी गतिविधियों में एक बहुत बड़ा अभाव पैदा हो जाता है ।

हो सकता है कि हम इस अभाव को तुरन्त ही महसूस न करें, क्योंकि तुरन्त हमारे ऊपर जो प्रतिक्रिया होती है उससे हमें हार्दिक वेदना व शोक होता है । धीरे-धीरे हमें महसूस होता है कि एक बहुत बड़ा, बहुत गहरा अभाव पैदा हो गया है और यह एक ऐसा अभाव है, ऐसी कमी है जिसकी पूर्ति नहीं की जा सकती । पर संसार में हमेशा से ऐसा होता आया है और हमें इसका सामना करना ही पड़ता है । हमें इस कष्ट या शोक का सामना नकारात्मक रूप में या निराशावादी रूप में नहीं करना चाहिए बल्कि आशावादी और रचनात्मक रूप में करना चाहिए तथा वह और हमारी शान्ति-प्रिय सेना के अन्य महान् नेता और सेनाध्यक्ष हमारे लिए जो काम छोड़ गए हैं उसके लिए हमें लगन से अपना सब कुछ लगा कर प्रयत्न करना चाहिए । वे हमारे लिए जो संदेश छोड़ गए हैं हमें उसका पालन करना चाहिए । अतः मैं आशा करता हूं कि यद्यपि वह अब नहीं रहे हैं फिर भी वह अमर रहेंगे और उनका संदेश हमारे साथ रहेगा और हमारा पथ-प्रदर्शन करेगा जैसा कि भूत में वह हमारा पथ-प्रदर्शन करता रहा है ।

†**श्री श्री० अ० डांगे** (बम्बई नगर—मध्य) : प्रधान मंत्री ने जो उद्गार प्रगट किये हैं मैं उनका समर्थन करता हूं । उन्होंने जो चित्र उपस्थित किया है उसमें कुछ और जोड़ना बहुत कठिन है । १९२० से मौलाना आजाद हमारे साथ राष्ट्रीय आन्दोलनों में रहे । इस प्रकार उनके चले जाने से जो कमी या अभाव पैदा हो गया है उसे हम सब महसूस करते हैं । मौलाना आजाद १०वीं शताब्दी की विभिन्न सभ्यताओं के प्रतीक थे और दर्शन, गणित व उमर खैय्याम के साहित्य की जीती-जागती तस्वीर थे । उनमें नवीन युग के आदर्शों तथा सनातन आदर्शों का एक सुन्दर सम्मिश्रण था ।

आज से १२ या १३ वर्ष पूर्व साम्प्रदायिकता की एक जबरदस्त लहर आई थी जिसमें छोटे बड़े अनेक लोग बह गये पर मौलाना आजाद एक चट्टान की भांति अडिग खड़े रहे । उस समय राष्ट्रीयता के आन्दोलन में इस प्रकार अडिग रहना मौलाना साहब के लिए एक साहस का काम था ।

इसमें कोई शक नहीं कि बहुत से महान् व्यक्ति पैदा होंगे पर उन जैसा व्यक्ति पैदा होना कठिन है ।

†**आचार्य कृपालानी** (सीतामढ़ी) : मौलाना आजाद के प्रति मौन होकर सम्मान प्रकट करना कठिन है क्योंकि उद्गार निकल ही पड़ते हैं । हमारे प्रधान मंत्री ने उनके सम्बन्ध में जो कहा है मैं उसमें उनके साथ हूं । सामान्य जनता को मौलाना आजाद की मृत्यु से जो दुःख हुआ है उसका पता हमें परसों की भीड़-भाड़ और कल की सार्वजनिक सभा को देखकर लगता है । जैसा कि प्रधान मंत्री ने बताया, मौलाना आजाद गत कुछ शताब्दियों में भारत में आई भिन्न-भिन्न सभ्यताओं के सच्चे प्रतीक थे । मौलाना आजाद जहां तक प्राचीन युग के आदर्श प्रतीक थे वहां वे नये युग के भी आदर्श प्रतीक थे । १९१२ में उन्होंने जो 'अलहिलाल' नामक उर्दू पत्र निकाला उससे उनके महान् ज्ञान तथा राजनैतिक मामलों की प्रवीणता व पटुता का पता लगता है ।

---

†मूल अंग्रेजी में ।